विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम दिनांक -०३ -०७ - २०२१

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -१० गौरा नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।
पिछले दिन भी अध्ययन किए थे आज उसके आगे अध्ययन करेंगे

वैसे उसकी उपस्थिति में भी किसी क़ानूनी कार्यवाही के लिए आवश्यक प्रमाण जुटाना असंभव था. तब गौरा का मृत्यु से संघर्ष प्रारंभ हुआ, जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है. डॉक्टरों ने कहा, "गाय को सेब का रस पिलाया जाए, तो सुई पर कैल्शियम जम जाने और उसके न चुभने की संभावना है. अत: नित्य कई-कई सेर सेब का रस निकाला जाता और नली से गौरा को पिलाया जाता. शक्ति के लिए इंजेक्शन दिए जाते. पशुओं के इंजेक्शन के लिए सूजे के समान बहुत लंबी मोटी सिरिंज तथा बड़ी बोतल भर दवा की आवश्यकता होती है. अत: वह इंजेक्शन भी अपने आप में शल्यक्रिया जैसा यातनामय हो जाता था. पर गौरा अत्यंत शांति से बाहर और भीतर दोनों की चुभन और पीड़ा सहती थी. केवल कभी-कभी उसकी सुंदर पर उदास आंखों के कानों में पानी की दो बूंदें झलकने लगती थीं. अब वह उठ नहीं पाती थी, परंतु मेरे पास पहुंचते ही उसकी आंखों में प्रसन्नता की छाया-सी तैरने लगती थी. पास जाकर बैठने पर वह मेरे कंधे पर अपना मुख रख देती थी और अपनी खुरदरी जीभ से मेरी गर्दन चाटने लगती थी. लालमणि बेचारे को तो मां की व्याधि और आसन्न मृत्यु का बोध नहीं था. उसे दूसरी गाय का दूध पिलाया जाता था, जो उसे रुचता नहीं था. वह तो अपनी मां का दूध पीना और उससे खेलना चाहता था, अत: अवसर मिलते ही वह गौरा के पास पहुंचकर या अपना सिर मार-मार, उसे उठाना चाहता था या खेलने के लिए उसके चारों ओर उछल-कूदकर परिक्रमा ही देता रहता.

इतनी हष्ट-पुष्ट, सुंदर, दूध-सी उज्ज्वल पयस्विनी गाय अपने इतने सुंदर चंचल वत्स को छोड़कर किसी भी दिन निर्जीव निश्चेष्ट हो जाएगी,यह सोचकर ही आंसू आ जाते थे. लखनऊ, कानपुर आदि नगरों से भी पशु-विशेषज्ञों को बुलाया, स्थानीय पशु-चिकित्सक' तो दिन में दो-तीन बार आते रहे, परंतु किसी ने ऐसा उपचार नहीं बताया, जिससे आशा की कोई किरण मिलती. निरुपाय मृत्यु की प्रतीक्षा का मर्म वही जानता है, जिसे किसी असाध्य और मरणासन्न रोगी के पास बैठना पड़ता हो.

जब गौरा की सुंदर चमकीली आंखें निष्प्रभ हो चलीं और सेब का रस भी कंठ में रुकने लगा, तब मैंने अंत का अनुमान लगा लिया. अब मेरी एक ही इच्छा थी कि मैं उसके अंत समय उपस्थित रह सकूं. दिन में ही नहीं, रात में भी कई-कई बार उठकर मैं उसे देखने जाती रही.

अंत में एक दिन ब्रहामुहूर्त में चार बजे जब मैं गौरा को देखने गई, तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान मेरे कंधे पर रखा, वैसे ही एकदम पत्थर-जैसा भारी हो गया और मेरी बांह पर से सरककर धरती पर आ रहा. कदाचित

सुई ने हृदय को बेधकर बंद कर दिया. अपने पालित जीव जंतुओं के पार्थिव अवशेष मैं गंगा को समर्पित करती रही हूं. गौरांगिनी को ले जाते समय मानो करुणा का समुद्र उमड़ आया, परंतु लीलामणि इसे भी खेल समझ उछलता-कूदता रहा. यदि दीर्घ नि:श्वास का शब्दों में अनुवाद हो सकता, तो उसकी प्रतिध्वनि कहेगी, आह मेरा गोपालक देश